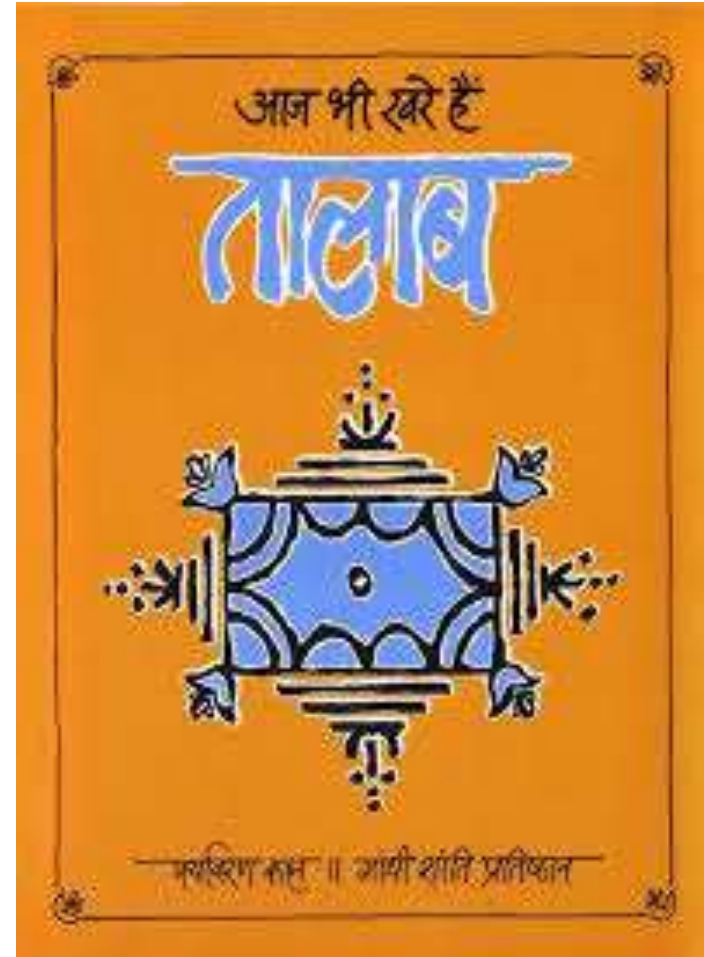


संसार सागरस्य नायकाः

- प्रस्तुत पाठ अनुपम मिश्र जी की कृति 'आज भी खरे हैं तालाब' के संसार सागर के नायक नामक अध्याय से लिया गया है इसमें विलुप्त होते जा रहे पारंपरिक ज्ञान कौशल एवं शिल्प के धनी गजधर की चर्चा की गई है। पानी के लिए मानव निर्मित तालाब और बावड़ि जैसे निर्माणों को यहाँ लेखक ने संसार सागर के रूप में माना है।



गजधर



- के आसन् ते अज्ञाता नानानः? शतशः सहस्रशः तडागाः सहसैव शून्यात् न प्रकटीभूताः । आइमे एव तडागाः अत्र संसारसागराः इति । एतेषाम् आयोजनस्य नेपथ्ये निर्मापयितृणाम् एककम् निर्मातृणाम् च दशकम् आसीत् । एतत् एककं दशकं च आहत्या शतकं सहस्रंवा रचायतः स्म। परं विगतेशु द्विवर्षेषु नूतन पद्धत्या समाजेन यत्किंचित् पठितम्। पठितेन तेन समजेन एककं दशकंसहस्रञ्च इत्येतानि शुन्ये एव परिवर्तितानि।



तालाब



- अस्य नूतन समाजस्य मनसि इयमपि जिज्ञासा नैव उद्भूता यत् अस्मात्पूर्वम् एतावतः तडागान् रचयन्ति स्म। एयतादृशानी कार्याणि कर्तुं ज्ञानस्य यो नूतनः प्रविधि विकसितः, तेन प्रविधिनाऽपि पूर्वं सम्पादितम् एतत्कार्यं मापयितुं न केनापि प्रयतितम्।



तालाबों की रचना कैसे हुई ?

पहले जलवायु का सुखी दौर था। जहाँ बहुत जलवायु बरसती थी। जिसका फलित भी जलवायु के दिनों में ही जल जमा करके रखा गया था। जहाँ से जल जमा कर लेते, जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे। जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे।

जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे। जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे।

जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे। जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे।

जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे। जहाँ से जल जमा कर लेते थे। जिसका फलित जहाँ जलवायु के दिनों में ही जल जमा कर लेते थे।



1. एक अच्छी व
2. एक अच्छी

3. एक अच्छी
4. एक अच्छी

अद्य ये अज्ञातनामानः वर्तन्ते
पूरा ते बहुप्रथिता आसन् ।
अशेषे हि देशे तडागाः
निर्मयन्ते स्म, निर्मातारोऽपि
अशेषे देशे निवसन्ति स्म।

